P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO : 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय दर्शन का वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एवं जीवनशैली के संदर्भ में अध्ययन

दामोदर प्रसाद नागर
शोधकर्ता
शिक्षा शास्त्र विभाग,
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
गांधी विद्या मंदिर,
सरदारशहर, भारत

रमा शर्मा
शोध निर्देशिका
शिक्षा शास्त्र विभाग,
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय) गांधी
विद्या मंदिर,
सरदारशहर, भारत

सारांश

भारतीय दर्शन अनादिकाल से प्रकृति का आराधक रहा है। मनुष्य एवं प्रकृति और वन्य जीवों के सामजंस्य के फलस्वरूप भारतीय दर्शन की समस्त सृष्टि में अलग ही छवि दृष्टिगोचर होती है। हमारे देश में प्राचीन काल से मानव सभ्यता के जो सामाजिक रीति रिवाज चले रहे हैं उनके पीछे मानव का ईश्वर व वेदों में आस्तिक भावना के साथ–साथ वैज्ञानिक भावना हैं तथा पर्यावरण के संतुलन की मर्यादा भी है।

पर्यावरण संरक्षण प्राचीन काल से ही भारतीय दर्शन और जीवन शैली का अभिन्न अंग रहा है। प्रकृति प्रेम तथा आदर की भारतीय परम्परा अति प्राचीन है जिसका प्रारम्भ वैदिक युग से ही हुआ। प्रकृति के माध्यम से जीवन की मंगल कामना करना यह हमारे वेदों की विशेषता रही है। वेदों का संदेश है कि मानव शुद्ध वायु में श्वांस लें, शुद्ध जल का पान करें, शुद्ध अन्न, फल, भोजन का आहार करें, शुद्ध मिट्टी से खेले कूदे तथा कृषि करें।

आज तथा कथित औद्योगिकीकरण तथा आधुनिकीकरण से कुछ भी शुद्ध नहीं बचा है। आज का आधुनिक विज्ञान भी यह मानता है कि 'जैसा खाये अन्न वैसा होवे मन।'' पूर्वकाल में हमकों शिक्षा भी यही दी जाती थी कि हम प्रकृति के विभिन्न संसाधनों का अत्यधिक संरक्षण करें उसका कम दोहन करें न कि शोषण तथा कम दोहित संसाधनों का अधिकतम उपयोग करें।

मुख्य शब्द : दर्शन, पर्यावरण, संरक्षण

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन में वैदिक संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की अनेक धारणाएँ है – जो हमें पशु–पक्षियों के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक धरोहर के रूप में रक्षित करने का संदेश देती है। वैदिक धारणाओं को धर्म से जोडकर पर्यावरण संरक्षण संभव है। वस्तुतः इन सभी के पीछे वैज्ञानिक अभिप्रायः यह है कि ये प्रजातियां लुप्त न हो तथा सभी का जीवन संतुलित रूप से चलता रहे।

वस्तुतः जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक वृक्ष हमारे काम आते हैं। भूमि की उर्वरा शक्ति के संरक्षण हेतु भू–क्षरण, भूस्खलन तथा बाढ़ को रोकने मे भी वन सहायता करते हैं। जन्तओं एवं वनस्पतियों के बीच आवश्यक संतुलन बनाये रखने में वृक्ष ऑक्सीजन तथा कार्बनडाईऑक्साइड को निश्चित अनुपात में रखते हैं। वृक्ष काटने के बारे में वेद निशेध करते हुए निर्देश देते हैं कि जिस वृक्ष पर पक्षियों के घोंसले हैं एवं देवालय तथा शमशान भूमि पर उगे वृक्षों को नहीं काटना चाहिए। हमारी वैदिक संस्कृति में वृक्षों को भी देवता मानते है।। हमारे भारतीय संस्कार एवं त्यौहार पशु–पक्षियों और वृक्षो के बिना संभव नहीं हो पाते हैं। इसी प्रकार पेड़ हमारे देश के हर हिन्दू परिवार के घर में मिलता है।

पशू पक्षियों एवं पेड़ों के औषाधीय एवं पर्यावरणीय महत्व को सम्पूर्ण विश्व जानता है। यही जैविक तत्व मानव जीवन शैली को भी प्रभावित करते हैं। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण प्रदूषण की समस्या का समाधान हमारे वेदों में निहित है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय दर्शन का आधार अत्यधिक प्राचीन है। देश की सामाजिक संस्थाएँ इसी प्राचीनता के योग से पल्लवित और पुष्पित हुई है। भारतीय दर्शन के विकास क्रम का इतिहास सहस्त्रों वर्षों का है जिसमें अनेक सामाजिक तत्वों का योग है। वैदिक युग से ही भारत की सभ्यता और संस्कृति उन्नत रही है। भारतीय संस्कृति की अक्षुणता बनी हुई है। यद्यपि इसी बीच अनेकानेक विदेशी आक्रमण हुए जिन्होनें देश पर शासन स्थापित किया। विभिन्न शताब्दियों में होने वाले परिवर्तन और परिवर्द्धन हिन्दु संस्कृति के अंग बन गये, किन्तु भारतीय समाज और संस्कृति का आधार तत्व वही बना रहा जो वैदिक युग में था

भारतीय संस्कृति का मूलाधार धार्मिक प्रवृति है जिसमें मनुष्य का सारा जीवन प्रभावित होता है।

भारतीय संस्कृति के विकास में अनेक सांस्कृतिक उपधाराओं का योग रहने पर भी उसके प्रधान स्वरूप के निर्माण में निःसंन्देह वैदिक विचार धारा का प्रवाह रहा है। उसमें ''यतः प्रवृतिर्भूतानां येन सर्वमिदंतत्म्'' के अनुसार सारे विश्व प्रपंच के विभिन्न व्यापारों और दृश्यों में एक सूत्रात्मकता को बतलाने वाली ''तत्र कोमोहकः शोक एकत्वमनुपश्यतः'' के अनुसार प्राणियों में एकात्म का दर्शन करने वाली और ''रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः'' के अनुसार बाहय जगत् तथा आभ्यन्तर जगत् में परस्पर अविरोधात्मक अद्वेत या ऐक्य को दर्शन वाली जो आध्यात्मिकता पाई जाती है। अन्धकार पर प्रकाश की, मृत्यु पर अमरत्व की और असत्य पर सत्य की विजय का जो विश्वास पाया जाता है और विरूद्ध परिस्थितियों में भी न टूटने वाला जो लचीलापन पाया जाता है। यह सब वैदिक विचारधारा की ही देन है। भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष व्यतीत होने के बाद भी आज तक वैदिक संस्कृति के रंग में रंगी हुई है। यहां तक की आज भी भारतीय आर्य हिन्दू धर्म में धार्मिक कार्यों और संस्कारों में वैदिक मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। आज भी विवाह की वही पद्धति है जो हजारों वर्ष पूर्व भारत में प्रचलित थी।

भारतीय दर्शन में वैदिक काल में मनुष्य ने पर्यावरण का न तो नुकसान किया, न ही उस पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश की, बल्कि अपनी जीवन शैली द्वारा पर्यावरण का शोषण करने के स्थान पर उसने पर्यावरण का सम्मान किया एवं उसे माँ का दर्जा देकर पूजा भी की।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध का महत्व इस दृष्टिकोण से अधिक जान पड़ता है कि भारतीय दर्शन हमें जीवन की खुशहाली की ओर ले जाता है। जियो और जीने दो, हमारा मूल मंत्र है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की भावना को बल प्रदान करने वाला भारतीय दर्शन हमें स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त प्रकृति के साहचर्य में जीने के लिए प्रेरित करता है और प्रकृति एवं पर्यावरण को स्वच्छ, संतुलित एवं प्रदूषण मुक्त रखने का संदेश भी देता है।

1.3 अध्ययन का औचित्य :–

भारतीय पौराणिक ग्रंथों में स्थान–स्थान पर प्रकृति और मनुश्य के संबंधों के बारे में विवरण है। मनुस्मृति व्यक्तियों के आचार और व्यवहार की एक स्वीकृत संहिता है। उसमें ऐसे अनेक श्लोक हैं जिनमें हिंसा का विरोध किया गया है। पशुओं की हत्या करने वाला ही केवल हिंसक नहीं कहलाता, बल्कि जो व्यक्ति पशु हत्या की आज्ञा देता है, जो पशु को काटता है, जो उसे मारता है, जो मांस बेचता या खरीदता है, जो उसे परोसता है और जो उसे खाता है वे सब हत्या के दोशी हैं। इसी प्रकार अपने आनंद के लिए जो निर्दोश पशुओं का वध करता है, उसे न स्पश्ट है कि जीवों के संरक्षण से ही मनुष्य का संरक्षण संभव है। जीव–जंतुओं को हानि न पहुंचाने और उनकी हत्या नहीं करने से ही मनुष्य अपने स्वयं को भविष्य के लिए बचा सकता है।

यद्यपि भारतीय दर्शन व पर्यावरण संरक्षण को लेकर अनेक अनुसंधान हो चुके है लेकिन शैक्षिक रूप से भारतीय दर्शन को पर्यावरण संरक्षण एवं वर्तमान जीवन षैली सम्बन्धित तथ्यों युक्त अनुसंधान आज तक नहीं हुआ है। भारतीय दर्शन का वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन पर क्या प्रभाव पाया गया है इसे व्यवहारिक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करना अनुसंधानकर्ता का प्रमुख ध्येय है।

समस्या कथन

भारतीय दर्शन का वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन शैली के संदर्भ में अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय दर्शन का अध्ययन करना।
2. भारतीय दर्शन में निहित जैविक कारकों का अध्ययन करना।
3. भारतीय दर्शन का वर्तमान समय में पर्यावरण सरक्षंण के संदर्भ में अध्ययन करना।
4. भारतीय दर्शन का वर्तमान समय में जीवन शैली के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोधविधि एवं प्रक्रिया

शोध समस्या का चयन करने के बाद शोध विधि का चयन करना महत्वपूर्ण कार्य होता है। शोधविधि अनुकूल न होने पर शोध के सार्थक परिणाम नहीं आते है। दार्शनिक अनुसंधान में प्रायः विवरणात्मक ऐतिहासिक व घटनोत्तर विधियों का ही प्रयोग होता है।

प्रस्तुत शोधकार्य करने हेतु विवरणात्मक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि का अनुसरण करते हुए विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से शोधकार्य को पुस्तकालय में प्राचीन साहित्य शास्त्र, प्राचीन भारतीय दर्शन से सम्बन्धित मौलिक साहित्य, सम्बन्धित, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से पूरा करने का भरसक प्रयास किया गया है।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध का विषय शिक्षा–दर्शन है, जिसमें दर्शन व विषय से सम्बन्धित सामग्री पुस्तकों व पत्र–पत्रिकाओं से संकलित की गई है। प्रस्तावित अध्ययन में भारतीय दर्शन के अन्तर्गत वैदिक कालीन दर्शन ही लिया गया है। जैविक कारकों के अन्तर्गत प्राणी तथा वनस्पति जगत को शामिल किया गया है। प्राणियों एवं वनस्पति का पर्यावरण संरक्षण में क्या योगदान है, का वर्णन किया गया है। सांस्कृतिक महत्व के प्राणियों व वनस्पतियों का जीवन शैली पर क्या प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में किसी भी प्रकार की सांख्यिकीय गणना विधि का प्रयोग नहीं किया गया है।

निष्कर्ष

हम कोई भी कार्य करते हैं तो उसके पीछे कोई न कोई उद्देश्य निश्चित होता है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही मानव कार्य करता हैं। इसी प्रकार शोधकर्त्ता भी अपना शोध कार्य किसी लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने

के लिए करता हैं। शोधकर्त्ता द्वारा ऐसी समस्या को लिया जाता हैं जिसके ऊपर कोई कार्य नहीं हुआ हो। शोधकर्त्ता उस समस्या पर अपना कार्य करता हैं। उस कार्य के फलस्वरूप उसे अन्त में समस्या का समाधान व उद्देश्य की पूर्ति होती है। शोधकर्त्ता का उद्देश्य हमेशा मानवतावादी, समाजोपयोगी तथा शिक्षाप्रद होता हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में शोधकार्य भी शिक्षा को नई दिशा प्रदान करने के लिए किया जाता है। इसलिए कहा जाता हैं कि किसी शोधकर्त्ता के शोध कार्य की सार्थकता तभी सिद्ध होती जब किसी शोधकार्य की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्श समाजोपयोगी तथा शिक्षा को नई दिशा प्रदान करने में सक्षम हों। मानवीय संवेदना से सम्बन्धित किसी भी अनुसंधान का निश्कर्श कभी भी स्थायी या सार्वभौमिक नहीं हो सकता। देश, काल एवं परिस्थिति के आधार पर षिक्षा में परिवर्तन सम्भव है। अतः शोधकर्ता के निष्कर्श भी परिवर्तनीय हो सकते हैं। विकास की प्रक्रिया में समस्यायें आती हैं, इन समस्याओं के निदान एवं सत्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन मार्ग से गुजरना होता है। समस्या का निदान व सत्य का स्थायी मानक अर्थात् खोज का निष्कर्श वह होता है, जिसके आधार पर ही मानव जाति के भावी विकास की योजनायें बनती है। अतः हम कह सकते हैं कि मानवीय सभ्यता के विकास का आधार है –अनुसंधान। प्रत्येक समस्या पर अध्ययन करते हुए जहां अनुसंधान का अन्तिम अध्याय समस्या के मन्थन से प्राप्त निष्कर्ष होता है, वह दूसरी ओर मानव जाति के विकास की दिशा।

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने इस शोधकार्य के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त करता हूँ कि आधुनिक वैज्ञानिक युग में भारतीय दर्शन पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ शान्त जीवन शैली को भी प्रभावित करता है।

यह शोधकार्य सम्पूर्ण सृष्टि में पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन शैली के सन्दर्भ में पूर्ण स्पष्टीकरण व्यक्त करता है।

संक्षेप में भारतीय दर्शन का वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन शैली पर प्रभाव इस शोधकार्य द्वारा दृष्टि गोचर हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

हिन्दी पुस्तकें

मिश्र. डॉ. जयशंकर. 1996. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास. पृ.सं. 2

कौसलेन्द्रदास. एस. 2015ण तिलक और शिखा का वैज्ञानिक आधार, पाथेय कण. पृ.सं. 34.36

मिश्रा. प्रेयसी. 2004. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व. जयपुर प्रकाशन. पृ.सं. 20

माहेश्वरी. एस.एल. 2015ण भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक ओंकार एवं शंख. पाथेय कण. पृ.सं. 39.40

श्रीवास्तव. रामलाल. 2003. हठयोग प्रदीपिका. श्री गोरखनाथ मंदिर. गोरखपुर. पृ.सं. 82

श्रीवास्तव. रामलाल. 2010. हठ योग प्रदीपिका. प्रकाशक श्री गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर. उ.प्र.. पृ.सं. 155

शुक्ल. आचार्य रामचन्द्र. 1991. चिन्तामणि भाग 1. इण्डियन प्रेस प्रा. लिमिटेड. इलाहाबाद।

सिंह. डॉ. निरंजन. 1998. प्राचीन भारत का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. रिसर्च पब्लिकेषन्स. जयपुर. पृ.सं. 72

शुक्ल. हीरालाल. 2002. .आधुनिक संस्कृत–साहित्य की भूमिका. पृ.सं.72

सिंह. आर.आर. 1999. नैतिकता के लिए षिक्षा. दीपक परनामी. जयपुर. पृ.सं. 102

सिंह. शुकदेव. 2006. रैदास बानी. राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली।

स्वामी युगलानन्द, संवत 1963. बोध सागर. श्री वेकटेश्वर प्रेस. मुम्बई।

गुरू ग्रन्थ साहिब. संवत 1961. शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी. अमृतसर।

रामानन्द. दिग्विजय. 1947. स्वामी भगवदाचार्य. श्रीरामानन्द साहित्य मन्दिर. राजपूताना।

वड्थवाल. डॉ. पीताम्बर दत्त. 2003. योग प्रवाह. काशी विद्यापीठ।

इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया. 1885 से 1887 ई. तक. डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर भाग 8.

ट्राइब्स एण्ड कास्ट ऑफ नार्दन प्रोविन्सेज एण्ड अवध. 1896. डब्ल्यू क्रूक भाग–2

उत्तर भारत की सन्त परम्परा. 2008ण संपा. पं. परशुराम चतुर्वेदी. भारतीय भण्डार लीडर प्रेस प्रयाग।

वर्मा. डॉ. रामकुमार. 1954ण हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. रामनारायण लाल बुक सेलर्स एण्ड पब्लिसर्स।

पल्लव : सुमित्रानन्दन पंत. 1993ण राजकमल प्रकाशन. नई दिल्ली।

हितोपदेश. संवत 2068।

शुक्ल यजुर्वेद. 2009ण चौखम्भा संस्कृत संस्थान. वाराणसी.

गंगासागर. राय. 2010ण हिन्दी काव्य मीमांसा. चौखम्भा विद्या भवन. पृ.सं.72

पाण्डेय. संगम लाल. 1996ण भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस. इलाहाबाद.

उपाध्याय. आचार्य बलदेव. 1935 भारतीय दर्शन. शारदा मन्दिर वाराणसी.

सांख्य तत्व कौमुदी. 2005ण संपा. डॉ. गजानन शास्त्री मूसलगॉवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी. ई।

वाचस्पति. गैराला. 1986. संस्कृत साहित्य का इतिहास. पृ.सं. 229

उपाध्याय. बलदेव. 1996. संस्कृत साहित्य का इतिहास. रिसर्च पब्लिकेषन्स. जयपुर. पृ.सं. 156

दिनकर. 1966. संस्कृत साहित्य का इतिहास. आगरा पब्लिकेषन्स. आगरा. पृ.सं. 53

आचार्य. दीपांकर. 1974. कौटिल्य कालीन भारत. लखनउ हिन्दी समिति. उतरप्रदेश।

पारीख एकता, 2017 पर्यावरणषिक्षा, राखीप्रकाषन, आगरा, पृ.सं. 12

व्यास अरूणा, 2016, लोकसंस्कृतिसमाज एवंपरिस्थितिकोसंतुलन, राजस्थानहिन्दीग्रन्थअकादमी।

महाराणानिषा एवंराठौड़ मीनाबुद्धिसागर, 2014, पर्यावरणषिक्षाऔरजागरूकता, अग्रवालपब्लिकेषन, आगरा।